पारिस्थितिकी पर्यटन से स्थानीय सुसंगत विकास

–अमरेंद्र किशोर

पारिस्थितिकी पर्यटन ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यटन विकास में रचनात्मक योगदानकर्ता के रूप में विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है और भारत दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता वाले सात देशों में से एक है। इस कारण अपनी समृद्ध एवं प्राचीन विरासत के कारण यह बहुत से देशों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। कहने का आशय है कि अपने देश में इको फ्रेंडली टूरिज़्म की अपार संभावनाएं हैं। देश के पर्यावरण मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, होटल एसोसिएशन, टूर ऑपरेटर आदि 'ईको फ्रेंडली' टूरिज़्म को आधार बना कर पैकेज घोषित करते हैं। ऐसे पैकेज टूर के दौरान पर्यावरण संरक्षण का तो ध्यान रखा ही जाता है, साथ ही, पर्यटकों को 'इको फ्रेंडली' बनने के लिए प्रेरित भी किया जाता है।

सुसंगत विकास और पारिस्थितिकी पर्यटन नई दुनिया के रचे गए शब्द हैं। बावजूद इसके कि पहली नज़र में ये शब्द अपने आप में परस्पर विरोधाभास रखते हैं। क्योंकि आधुनिक विकास की प्रक्रिया पारिस्थितिकी के साथ छेड़छाड़ से लेकर उसके सफाये से होती है। इससे स्थानीय असंतुलन पैदा होना लाज़िमी है और ऐसी स्थिति में विकास का सुसंगत होना किसी भी सूरत में संभव नहीं लगता।

समूची दुनिया में विकास और पर्यटन के नाम पर जल–जंगल–जमीन–जन और जानवर का सदियों से दोहन होता रहा है। निर्माण के लिए पहाड़ तोड़े गए। खेती और दैनिक ज़रूरतों के लिए जंगल काटे गए। सिंचाई और पनबिजली के लिए नदियों की धार के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं हुईं और विकास के नाम पर उद्योगों और बांधों के लिए करोड़ों लोगों को अपने मूल से उजड़ना पड़ा। आज के इस माहौल में जब विकास का सबसे ज़्यादा असर कुदरती संसाधनों पर पड़ रहा है और साथ में परियोजना स्थलों की स्थानीय आबादी को उसकी कीमत चुकानी पड़ी है, ऐसी परिस्थिति में इन दोनों पारिभाषिक शब्दों में विकसित होते इंसानी समाज की समझदारी दिखती है। यह आधुनिक समाज का सुखद पक्ष है।

सुखद इस संदर्भ में, क्योंकि पारिस्थितिकी पर्यटन पर्यावरण के संतुलन में बदलाव के बिना विकसित होता है। साथ ही, यह प्रकृति के मन मिज़ाज के अनुरूप है। मतलब, स्थानीय कुदरत के स्वभाव और मिज़ाज तथा उपलब्ध संसाधनों की मौजूदगी को ध्यान में रखकर पर्यटन की योजना तय की जाती है। इस प्रकार पारिस्थितिकी पर्यटन का सीधा मतलब कुदरती संसाधनों

यवल–वन्यजीव अभयारण्य, मध्य प्रदेश

को नुकसान पहुंचाए बगैर पर्यटन की सुविधाओं और स्थितियों के निर्माण से है। दुनिया के कई मुल्कों में कुदरत के खालिसपन को बचाकर जिस तरह का पर्यटन उद्योग विकसित किया जा रहा है, यह बात सामान्य लोकमानस के लिए अचरज का विषय ज़रूर है। क्योंकि प्रकृति के भारी विनाश के बाद ही पूरी दुनिया में खेत से लेकर शहरी सभ्यताएं विकसित हुई हैं।

वजह चाहे कुछ भी हो लेकिन आज भी यह धारणा बनी हुई है कि जंगलों को काटकर ही पर्यटन के आयाम खुलते हैं। यह ठीक है कि कुछ दशक पहले तक ज़्यादा से ज़्यादा पर्यटकों को लुभाने के गरज से पर्यटन जल–जंगल और ज़मीन के कुदरती स्वरूप को तबाह किए जाने का भूमंडलीय कारोबार रहा है। बीती सदी के आठवें दशक के आते–आते ही इस कारोबार के भयानक चरित्र का स्थानीय विरोध होने लगा। इसी बीच, विभिन्न प्रकार के जैव–संसाधनों को बचाने को लेकर जब सख्त कानून पारित किए गए तो वैश्विक स्तर पर पर्यटन उद्योग के सामने उन विकल्पों को तलाशने की लाचारी हो गई। यही वजह है कि मुम्बई के मैंग्रोव के जंगलों को काटकर जब होटलों का निर्माण शुरू किया गया तो मैंग्रोव बचाने के लिए सरकार की ओर से जो दिशा–निर्देश आए उसमें इस खास किस्म के जंगलों को काटे जाने की सख्त मनाही थी। केवल मुम्बई ही नहीं बल्कि दुनिया के हर समुद्र तट पर कुदरती संसाधनों के साथ छेड़छाड़ हो रही थी। समुद्र तटीय इलाकों के अलावा पहाड़ों को काटकर या उसके सफाये के बाद पर्यटन के जिन लुभावने साधनों का विकास किया गया, वह प्रकृति की अपूरणीय क्षति हुई।

लंबे समय तक मौज–मस्ती के शौकीन पर्यटकों के गैर–ज़िम्मेदारीपूर्ण रवैये ने और व्यवसायीकरण के बढ़ते अनपेक्षित दबाव ने ऐसे स्थलों के पर्यावरण पर विपरीत असर डाला है। साथ ही, वहां की सुंदरता को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया। मसलन, 2 लाख की आबादी वाले शिमला में हर साल 45 लाख से कहीं ज़्यादा पर्यटक पहुंचते हैं। इसी तरह 30,000 की आबादी वाले लेह का हाल और भी बुरा है। यहां आबादी से 10 गुना ज़्यादा पर्यटक पहुंचते हैं। यह सच है कि इतनी भारी संख्या में पर्यटकों के आने से यहाँ के अधिकतर लोगों के लिए पर्यटन आजीविका का मुख्य ज़रिया बन चुका है। लेकिन यहां के भू–उपयोग में आए परिवर्तन और रोज़गार के तरीके में आए भारी बदलाव के चलते स्थिति नाजुक होती जा रही है। क्योंकि हिमनद से बहने वाले पानी से पर्यटन उद्योग का काम चलने वाला नहीं है। इसके चलते ज़मीन के बोर से पानी का इस्तेमाल करने की शुरुआत लेह कस्बे में बहुत पहले हो चुकी है। खबर तो यह भी है कि अब लेह का पानी पीने लायक नहीं रहा। क्योंकि पर्यटकों के लिए सूखे शौचालयों से पानी वाले शौचालयों में आए बदलाव ने वहाँ के पानी को संक्रमित कर दिया है। लद्दाख जैसे दुनिया भर के अनगिनत ठिकानों में पर्यावरण और पारिस्थितिकी का असंतुलन हो चुका है।

दुनिया भर में पर्यटकों के आने, रहने और उनके द्वारा स्थानीय पर्यावरण के साथ मनमाने व्यवहार से जुड़े अनगिनत प्रसंग हमें डराते रहते हैं। ऐसा क्यों न हो, जिन इलाकों में पर्यटन के चलते प्लास्टिक का कचरा अधिक है, वहां मैंग्रोव के जंगल सबसे तेजी से घट रहे हैं। ऐसे इलाकों में दक्षिण–पूर्व एशिया प्रमुख है। प्लास्टिक से तबाह हो रहे मैंग्रोव जंगलों की तरह कई सारे दृष्टांत हैं जो बता रहे हैं कि बेपरवाह पर्यटन ने माटी और पानी के अस्तित्व को संदेहास्पद बना दिया है।

मौजूदा दौर में समूचे विकासशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में एक अजीब किस्म की अराजकता पैदा हो गई है। वहाँ संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन और स्थानीय समुदायों के आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ज़रूरतों के बीच संतुलन कायम करने के लिए व्यापक संघर्ष करना पड़ रहा है। तो यह सवाल है कि संकट के इस दौर में किन तरीकों से पारिस्थितिकी और पर्यावरण के मनोनुकूल पर्यटन का कारोबार विकसित किया जाए। क्योंकि कुदरती संसाधन सीमित हैं और उनके आपस का असंतुलन आखिरकार इंसानी समाज पर भारी पड़ सकता है। संसाधनों के उचित रखरखाव से ही इंसानी जीवन और कुदरती संसाधनों के बीच संतुलन कायम रह सकता है। साथ में लम्बे समय तक प्रकृति का उपयोग हम कर सकते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन की चर्चाओं में हम उन तथ्यों पर ध्यान दें कि जिन स्थानों तक इंसान की पहुँच नहीं है वहाँ कुदरत का खालिस रूप आज जस का तस है। लेकिन जिन जंगलों में पहुंच कर उसने रातें बिताई है, अमूमन वहां आग लग रही है। जिन नदियों के पानी से खेती शुरू की थी, वे सब की सब प्रदूषित हैं या वे खत्म होने की कगार पर हैं। यह सब जैव संसाधनों और तमाम कुदरती अवयवों पर इंसानी आबादी के दबाव के कारण हो रहा है। और साथ में उसकी बेपरवाही ने पर्यटन के चेहरे को घिनौना बना दिया है।

हाल के दशकों में जिस तरह पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंधन से पारिस्थितिकी पर्यटन की जो कला विकसित हुई है, उससे एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी होने लगीं और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों की आजीविका की अनुकूल परिस्थितियां भी तैयार हो गई हैं। सबसे अच्छी बात तो यह भी है कि रोज़गार के एक से एक अवसर आने से नए कौशल का विकास हुआ है और उसके चलते स्थानीय आबादी का स्थायी जीवनयापन का भरोसा पुख्ता हुआ है।

यह बात महत्वपूर्ण है कि पारिस्थितिकी पर्यटन (ईको फ्रेंडली टूरिज्म) कोई नई अवधारणा नहीं है, बल्कि वर्तमान परिस्थितियों ने इसे पर्यटन का एक अनिवार्य अंग बना दिया है। इसी संदर्भ में यह बताना ज़रूरी है कि कुदरत को बचाकर पर्यटन को बढ़ावा देने में अव्वल भूटान ने पारिस्थितिकी पर्यटन की एक बेमिसाल नज़ीर पेश की है। लेकिन सवाल है कि क्या भारत ने भूटान से किसी प्रकार की प्रेरणा लेकर पारिस्थितिकी पर्यटन के सही और सटीक तरीके

से लागू किए जाने की पहल की है?

बीते कुछ दशकों में अपने देश में पर्यटन के बढ़ते शौक के कारण पर्यटन स्थलों पर भीड़ बढ़ने लगी है जिससे उसके साथ व्यवसायीकरण भी होने लगा। बीती सदी के आखिरी दशक से समूची दुनिया में बदलाव के संकेत मिलने लगे थे और 21वीं शताब्दी के आते ही जीवन के कुछ नए आयाम खुलकर सामने आए। पर्यटन का विकास उनमें से एक था। विकास की इस समूची प्रक्रिया में जो कदम उठाए गए, वे कुदरती संसाधनों के अतिशय दोहन और आखिरकार उनके विनाश को सफल बनाने का उद्यम साबित हुआ। माहौल ऐसा बन गया कि पर्यटन के नाम पर पहाड़ों से लेकर रेगिस्तान में होने वाले आयोजनों के बाद बिखरे कचरों ने एक समय के बाद स्थानीय आबादी का जीना मुश्किल कर दिया। जिन संसाधनों को इंसान हज़ारों साल से संजोता चला आ रहा था, वे सब के सब आखिरी सांसें गिनने को मज़बूर हुए।

इन्हीं मुश्किलों के बीच अंतर्राष्ट्रीय फोरम, पृथ्वी सम्मेलनों से लेकर जलवायु परिवर्तन के वैश्विक आयोजनों में पर्यावरणविद् और शोधकर्ताओं ने पर्यटन से होने वाले खतरनाक परिणामों को सब के सामने रखना प्रारंभ किया। दुनिया भर में बहसों का दौर चला। भूटान जैसे देश भी पर्यटन को एक निश्चित दायरे में रखने के लिए प्रतिबद्ध दिखे। क्योंकि वहां के संविधान में पर्यावरण की चिंताएं हैं और उसके संवर्धन के प्रावधान हैं। लेकिन भारत के अलावा दक्षिण–पूर्व एशिया में पर्यटकों का कचरा नासूर बन गया। कचरा तक बात सीमित रहती तो उसके कुशल निस्तारण के मुकम्मल प्रबंधन भी हो सकते थे। बांग्लादेश के बंदरबन और रांगामाटी जैसे इलाकों में निर्माण कार्यों से वहां के जैव–संसाधन विद्रोही हो गए। बांग्लादेश की तर्ज पर विकासशील और विकसित मुल्कों में भी कुदरत का प्रतिकार लगातार बढ़ने लगा। इस प्रकार, पर्यटन को सीमित करने के बदले उसे किसी पद्धति में समायोजित किया जाना ज़रूरी समझा गया। इसके बाद 'ईको–फ्रेंडली टूरिज्म' की धारणा ने जन्म लिया। यही वजह है कि 'हमारा पर्यावरण सुरक्षित है तो हमारी पृथ्वी सुरक्षित है', जैसी बातों के शाश्वत सत्य को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र ने सदस्य राष्ट्रों का ध्यान ईको टूरिज़्म की ओर आकर्षित किया। स्ट्रैटेजिक इन्वेस्टमेंट रिसर्च यूनिट द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से यह पता चलता है कि भारत ने बेहद गंभीरता से पारिस्थितिकी पर्यटन को अपनाने की दिशा में काम किया है।

सुखद खबर है कि देश–विदेश में पर्यावरण पारिस्थितिकी की बनावट और बुनावट को लेकर समाज और सरकार की संवेदनशीलता उल्लेखनीय है। अपने देश में सरकार इस दिशा में काम तो कर रही है लेकिन अभी लोकमानस को इस दिशा में समझने में समय लगेगा। क्योंकि आज तक तरीके से यह समझा पाने में कहीं कोई कमी रह गई है कि पर्यटन के संदर्भ में विनाश पर विकास की स्थितियों में बदलाव आया है। चूंकि ईको फ्रेंडली टूरिज़्म मतलब पारिस्थितिकी पर्यटन ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यटन विकास में रचनात्मक योगदानकर्ता के रूप में विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है और भारत दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता वाले सात देशों में से एक है। इस कारण अपनी समृद्ध एवं प्राचीन विरासत के कारण यह बहुत से देशों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। कहने का आशय है कि अपने देश में इको फ्रेंडली टूरिज़्म की अपार संभावनाएं हैं। जैसे देश के पर्यावरण मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, होटल एसोसिएशन, टूर ऑपरेटर आदि 'ईको फ्रेंडली' टूरिज़्म को आधार बना कर पैकेज घोषित करते हैं। ऐसे पैकेज टूर के दौरान पर्यावरण संरक्षण का तो ध्यान रखा ही जाता है, साथ ही पर्यटकों को 'इको फ्रेंडली' बनने के लिए प्रेरित किया जाता है।

गौरतलब है कि विदेशी पर्यटकों की तुलना में स्थानीय पर्यटकों के लिए यह एक बड़ा दायित्व है कि अपने कुदरती संसाधनों और उनसे जुड़ी परंपराओं का सम्मान करें। स्थानीय संसाधनों के सम्मान का आशय वहां के मूल वाशिंदों की भावनाओं और उनकी परम्पराओं का सम्मान है जो 'यह हमारी धरती है' जैसी बातें अपने आयोजनों–उत्सवों और लोक कथाओं से लेकर लोकगीतों में करते हैं। उन लोगों का पर्यावरण एक साझी विरासत है, जैसे हमारी नदियाँ–खेत–खलिहान, बगीचे, धार्मिक स्थलों के अलावा ऐतिहासिक इमारतें क्षेत्रीय भावनाओं के शरणगाह होते हैं जिसे हमें आने वाली पीढ़ी के लिए संजो कर रखना सिखाया जाता है। लेकिन सम्पूर्णता में प्रकृति, सभ्यता और संस्कृति ने जो हमें दिया है, वो हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को उसी रूप में सौंपना है। यही हमारे देश की परम्परा है। बात चाहे लघु परम्परा की हो या दीर्घ परम्परा की, हर परम्परा की जड़ों वहां के समाज की पीढ़ियों से नाता रहता है। जब देश की कुदरती धरोहरों की बात आती है तो जंगलों का समाज और वहां के रहवासियों की जीवनशैली का तारतम्य बचाया जाना कहीं ज़्यादा ज़रूरी है।

ध्यान रहे, वैश्विक संदर्भ में भारत का पक्ष स्पष्ट है। चूंकि पारिस्थितिकी पर्यटन को लेकर वर्तमान सरकार मानती है कि संरक्षित क्षेत्रों और उनके आसपास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जाना ज़रूरी है। सरकार मानती है कि इसी मकसद को प्राथमिकता में रखकर एक सुसंगत विकास की दिशा तय की जा सकती है। इस बात का पछतावा ज़रूर है कि पर्यटन उद्योग की मार कभी किसी ज़माने में उस भूमि और संसाधनों से जुड़े लोगों को झेलनी पड़ी है। बीती बातों से आगे आज यह मान कर हम चलते हैं कि पर्यटन उद्योग जैव विविधता का हर हाल में सम्मान और उसकी हिफाज़त करेगा। मतलब जंगलों की अक्षुणता को हर हाल में बचाये रखना है। नदियों को प्रदूषण मुक्त रखना है और आसपास की जीवंत संस्कृति और उसकी विरासत के विभिन्न आयामों को बचाए रखना है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) का यह मानना है कि पर्यटन को महज मौज–मस्ती और धनोपार्जन तक

हाल के दशकों में जिस तरह पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंधन से पारिस्थितिकी पर्यटन की जो कला विकसित हुई है, उससे एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी होने लगीं और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों की आजीविका की अनुकूल परिस्थितियां भी तैयार हो गई हैं। सबसे अच्छी बात तो यह भी है कि रोज़गार के एक से एक अवसर आने से नए कौशल का विकास हुआ है और उसके चलते स्थानीय आबादी का स्थायी जीवनयापन का भरोसा पुख्ता हुआ है।

सीमित रखना ठीक नहीं है। बल्कि वर्तमान और खासतौर से भविष्य के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखना होगा। यदि मेहमानों–आगंतुकों की सुविधाओं को हम प्राथमिकता में रख रहे हैं तो यह भी देखना होगा कि स्थानीय पर्यावरण पर पूरी गतिविधियों का कैसा प्रभाव पड़ेगा। क्या स्थानीय आबादी इससे विचलित हो सकती है या पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करने में इस उद्योग की वजह से क्षेत्रीय समाजों के आर्थिक मामलों और संस्कृति की अक्षुण्णता पर असर पड़ सकता है? पारिस्थितिकी पर्यटन को गहराई से देखने पर इस संदर्भ की ओर ध्यान जाता है कि चाहे पर्यटक या उनकी खातिरदारी या उनकी सहायता के लिए तत्पर स्थानीय निवासी हो या स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र–इन सबके एक–दूसरे के साथ एक अंतरंगता और आपसी मध्यस्थता वाले रिश्ते होते हैं। लेकिन जब पर्यटन के साथ विकास की बात उभरती है तो हानिकारक या आशाजनक परिणामों की नाजुक परिस्थितियां लगातार हस्तक्षेप करती हुई दिखती हैं। इसके चलते पर्यावरण की हिफाज़त का मसला महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के मुद्दे पर भारत न तो अनभिज्ञ है और न ही उसकी तत्परता में किसी तरह की कमी देखी गई है। लिहाजा, जब एक समर्थ और सुसंगत पर्यटन की बात आती है, तो भारत सरकार ने इस दिशा में विशाल क्षमता से भरे पर्यटन का संकल्प रखा है और इस सम्बन्ध में किए गए कार्यों को विश्वव्यापी सराहना मिल रही है। विभिन्न शहरों, उन शहरों की विरासत और उसके विभिन्न आकर्षण के अलावा एक बेहद विशाल देहाती भारत की तस्वीर समूची दुनिया को अपनी ओर लुभा रही है। खास बात यह भी है कि इसके प्रति लोगों के कौतूहल और जिज्ञासा से भरे आकर्षण पैदा करने के मंसूबों को बढ़ावा दिया जाना साधारण और सतही बात कतई नहीं है। भारत की रूपहली संस्कृति, उसके रोचक पहलू, बेजोड़ खानपान, रंग–बिरंगे परिधान, रंगों में ढले कुदरती संसाधन, अनगिनत जीव और उनकी रिहाइश से जुड़े जीवंत तथ्यों का ताना–बाना एक ऐसे भारत का निर्माण करता है जो समूची दुनिया के सामने यह तर्क रखता है कि सच में 'अतुल्य भारत' अद्भुत तथा अद्वितीय है।

यह समझने की बात है राज्य स्तर पर विकसित होता पर्यटन उपभोग की अवधारणा से बिलकुल अलग है। अधिकतर राज्य सरकारें ग्रामीण जीवन को पर्यटन में शामिल कर रही हैं तो गांव के जीवन के लय का भरपूर सम्मान है। कृषि और किसानी को दिखाने और पर्यटकों को लुभाने का प्रावधान है तो किसान भी इसमें साझेदार या हितग्राही है। साहसिक यात्राओं के प्रावधान हैं तो उससे जुड़े पारम्परिक समुदायों को इसमें ससम्मान शामिल कर उनके जीवनयापन की भरपूर व्यवस्था के प्रावधान हैं। पहाड़ी इलाकों में होमस्टे जैसी सुविधाओं के मूल में बड़े निर्माणों को हतोत्साहित किए जाने का मकसद है तो साथ में स्थानीय लोगों के घर बैठे आय के स्रोत विकसित किए जाने की सकारात्मक सोच भी है। कहने का आशय है कि केंद्र या राज्य सरकार की सदिच्छा से स्थायी और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी जो सराहनीय पहल की जा रही है, वह समूची व्यवस्था का एक मज़बूत सकारात्मक पक्ष है। क्योंकि कहीं भी संसाधनों के उन्मूलन या उनके सफाये की बात नहीं है बल्कि समायोजन और समन्वय पर जोर है।

इनके अलावा, सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण फैसले किए गए हैं। उदाहरण के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने पर्यावरण पर्यटन विकास नीति घोषित की है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया गया है। इसी तरह कर्नाटक, सिक्किम, राजस्थान और आंध्र प्रदेश के वन एवं पर्यटन विभागों ने अधिकारी मनोनीत किए हैं जो इन गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करेंगे। केरल द्वारा स्थापित 'तेन्माला' इको–टूरिज़्म प्रमोशन सोसाइटी पर्यावरण पर्यटन का एक मॉडल तैयार करेगी। निजी क्षेत्र में भी पर्यावरण अनुकूल सैरगाहों और होटलों की धारणा ज़ोर पकड़ रही है।

बेशक भली–भाँति संरक्षित पारिस्थितिकी प्रणाली पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विभिन्न सांस्कृतिक और साहसिक गतिविधियों के दौरान एक कर्त्तव्यनिष्ठ, कम असर डालने वाला पर्यटक अपने व्यवहार से कुदरत को बचाना चाहता है। पुनर्भरण न हो सकने वाले संसाधनों का कम से कम उपयोग और उनकी न्यूनतम खपत का हिमायती बन जाता है। उल्लेखनीय है कि स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी पारिस्थितिकी पर्यटन की ज़रूरी शर्त है जो वैसे समुदाय का निर्माण करती है जिससे स्थानीय लोग प्रकृति, संस्कृति अपनी जातीय परम्पराओं के बारे में पर्यटकों को प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं–ऐसे कुछ लोकपक्ष हैं जिससे संसाधनों को कम से कम हानि पहुंचाकर स्थानीय लोगों को पर्यावरण पर्यटन का प्रबंध करने का अधिकार देने की सहमति सरकार देती है–ऐसी बातें उभरकर सामने आ रही हैं। क्योंकि पहाड़ों में या सुंदरबन जैसे अतिचुनौतीपूर्ण प्रदेशों में जीविका के वैकल्पिक अवसर अपनाकर अपने आय के जिस स्रोत को विकसित किए जाने की बात है, वह पर्यटक और स्थानीय

अभय जलप्रपात, कोडगु जिला, कर्नाटक

समुदाय–दोनों के लिए परस्पर लाभकारी हो सकता है।

राज्यों के स्तर पर पारिस्थितिकी पर्यटन का काम सराहनीय है। जैसे हिमाचल प्रदेश का मूल ध्येय समावेशी आर्थिक विकास के लिए राज्य को एक अग्रणी वैश्विक स्थायी पर्यटन स्थल के रूप में स्थान देना है। राज्य सरकार अपने प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और विरासत को संरक्षित करते हुए एक व्यापक और टिकाऊ पर्यटन अर्थव्यवस्था विकसित करना चाहती है। सरकार अपने नागरिकों के जीवन–स्तर में सुधार करने, नौकरी के अवसरों में वृद्धि करने, यात्री अनुभव बढ़ाने और पर्यटन में निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से नवाचार करने के मंसूबों के साथ सक्रिय है। असम का अपने खास किस्म के विज़न से देश भर में विश्व स्तर पर प्रशंसित ऑल–सीज़न ट्रैवलर डेस्टिनेशन विकसित करने का प्रयास अद्भुत है। जानकारों की मानें तो यह खास विज़न के जरिए अद्वितीय वन्य जीवन, खास जैव विविधता और एक बेजोड़ वंडरलैंड के अनुभव देने का ध्येय रखता है। असम सरकार की योजना है कि आने वाले सालों में पर्यटन लोगों के लिए राजस्व सृजन के मूलभूत स्रोतों में से एक हो। उम्मीद की जाती है कि पारिस्थितिकी पर्यटन सतत विकास में एक सक्रिय और महत्वपूर्ण योगदानकर्ता भी होगा। 'आमार आलोही' ग्रामीण होमस्टे योजना का उद्देश्य असम राज्य में ग्रामीण होम स्टे सुविधाओं को एक नया आयाम देना है। इस योजना का उद्देश्य पर्यटन ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में शिक्षित युवाओं के लिए स्वरोज़गार के अवसर पैदा करना है। होम स्टे योजनाओं पर सब्सिडी के माध्यम से अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार की संभावनाएं प्रदान करने की यह योजना अपने आप में असाधारण है।

इन सबसे अलग हटकर आंध्र प्रदेश सरकार प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों पर हाई–एंड लग्ज़री रिट्रीट विकसित कर रही है। निजी निवेश और सार्वजनिक–निजी भागीदारी योजनाओं को प्रोत्साहित कर और ईओडीबी (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) को बढ़ावा देकर पर्यटन उद्योग में निजी निवेश और उद्यमिता लाने और इसे बढ़ावा देने की योजना पर काम चल रहा है। सरकार पर्यटन के सक्षम और लक्षित सर्वव्यापी विपणन द्वारा पसंदीदा पर्यटन स्थलों की राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान स्थापित करने की इच्छा रखती है। केरल ने हाल के वर्षों में पर्यटन विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनका ब्रांड टैगलाइन गॉड्स ओन कंट्री पर्यटन के नाम से जाना–पहचाना नाम बन गया है। इसका सतत पर्यटन विकास बैकवाटर, आयुर्वेद और ईकोटूरिज़्म पर केंद्रित है। वे तीन श्रेणियों के तहत कई पर्यटन परियोजनाओं को तैयार और क्रियान्वित कर रहे हैं। सबसे व्यापक और सबसे प्रतिष्ठित परियोजनाओं में बेकल में एक समुद्र तट पर खास जगह का विकास यानी उसे बेहतरीन पर्यटक केंद्र के रूप में विकसित किए जाने की योजना है। वागामोन में एक हिल स्टेशन के विकास और एक बैकवाटर की एकीकृत योजना पर काम चल रहा है।

जैव विविधताओं से सम्पन्न भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन एक पर्यावरण–अनुकूल गतिविधि है। इस कारण इसका लक्ष्य पर्यावरण मूल्यों और शिष्टाचार को प्रोत्साहित करना है। साथ ही, निर्बाध रूप में प्रकृति का संरक्षण करना भी इसके खास उद्देश्य हैं। इस तरह पारिस्थितिकी विषयक अखंडता में योगदान करके वन्य जीवों

और प्रकृति को लाभ पहुँचाना एक असाधारण काम है। क्योंकि यह मानी हुई बात है कि जब क्षेत्र में परिस्थितियाँ (जैसे व्यवहार्यता, स्थानीय स्तर पर प्रबंध क्षमता और पर्यावरण पर्यटन विकास तथा संरक्षण के बीच स्पष्ट एवं नियंत्रित सम्पर्क) सही हों तो सुनियोजित एवं व्यवस्थित पारिस्थितिकी पर्यटन लम्बे समय में जैव विविधता के संरक्षण के सर्वाधिक कारगर उपायों में एक साबित होगा। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर राज्यों की सरकारों ने ऊर्जा के उपयोग, सोर्सिंग सामग्री और पर्यावरण के अनुकूल मानकों को अपनाने के लिए कुशल प्रबंधन का सहारा लिया है जो एक टिकाऊ विकास की दिशा में कार्रवाई कर रहा है। सरकार की यह कोशिश है कि पर्यटन और प्रकृति संरक्षण का प्रबंध इस ढंग से किया जाए ताकि एक तरफ, पर्यटन और पारिस्थितिकी की ज़रूरतें पूरी हों और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा हो। राज्य सरकारों ने नए कौशल, आय और महिलाओं के लिए बेहतर स्तर सुनिश्चित करने को लेकर कई कार्यक्रमों की शुरुआत की है।

ज़रुरत इस बात की है कि ग्रामीण और आदिवासी भारत को पर्यटन से जोड़े जाने की एक ठोस कार्यनीति पर काम किया जाए। गाँवों को उत्पादन केंद्र के तौर पर विकसित किया जाना बेहद ज़रूरी है। गाँव में पशुपालन, मुर्गीपालन से लेकर जैविक खेती पर ज़ोर दिया जाना ज़रूरी है। जिन जगहों पर सैलानी ठहरते हैं, वहां के बाज़ार के साथ गाँव के उन उत्पादन केंद्रों को जोड़ना होगा। उम्मीद की जाती है कि जो किसान या जो व्यवसायी अपना उत्पाद तैयार करेंगे, कम कीमत पर उत्कृष्ट उत्पाद पर्यटकों तक सीधे बाज़ार तक पहुंचाकर पर्यटन को तरीके से बढ़ाया जा सकता है।

भारतीयों को पारिस्थितिकी पर्यटन के क्षेत्र में मालदीव की प्रगति से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्मरण रहे कि मालदीव में चूंकि पर्यटन ही प्रमुख उद्योग है, वे पूरी तरह इस पर निर्भर हैं और उन्होंने अपनी समुद्री चट्टानों के संरक्षण के तौर–तरीके विकसित किए हैं। सभी सैरगाहों और होटलों के लिए यह अनिवार्य और अपरिहार्य है कि वे अपने कचरे का निपटान करें, जल संरक्षण करें और अपशिष्ट को फिर से काम में लाने (रि–साइक्लिंग) की व्यवस्था करें। इसके अतिरिक्त इंडोनेशिया ने भी इस मामले में उम्दा काम किया है। फिलीपींस का प्रकृति प्रेम जगजाहिर है। इसलिए पारिस्थितिकी पर्यटन को लेकर इस देश की गंभीरता और उपलब्धि प्रेरणा का प्रसंग है। नेपाल जैसे अन्य देशों ने अपने स्थानीय समुदायों के लाभ के लिए पर्यावरण पर्यटन से प्राप्त आय के उपयोग के कारगर तरीके विकसित किए हैं। उदाहरण के लिए फिलीपींस में समुद्री मछुआरों को इस बात के लिए राज़ी किया गया कि वे 'ब्लास्ट फिशिंग' नहीं करेंगे बल्कि इसके लिए वे अधिक परम्परागत और सुरक्षित तरीके अपनाएंगे। इंडोनेशिया में दुर्लभ पक्षियों की सुरक्षा के लिए 'बर्डवाच' नामक परियोजना शुरू की गई है।

स्थान विशेष की अपनी जैव–विविधता होती है और उन विविधताओं को पर्यटन से जोड़कर आय के बेशुमार स्रोत पैदा किए जा सकते हैं। ध्यान रहे, पर्यटक क्वालिटी की अपेक्षा रखता है। वह उस स्थानीयता को जी लेना चाहता है जो वहां के लोकजीवन की ताकत और सुंदरता होती है। जैव विविधता को बचाना ज़रूरी है लेकिन उसे बढ़ाने की दिशा में काम होना ज़रूरी है। अर्थात् संरक्षण और आर्थिक विकास के साधन के रूप में पारिस्थितिकी पर्यटन की क्षमताओं को पहचानने के लिए नए और अधिक समन्वित दृष्टिकोण की ज़रुरत है जिसमें स्थानीय क्षमता निर्माण और स्थानीय स्तर पर लाभों में बढ़ोत्तरी पर अधिक बल देने की गुंजाइश होनी चाहिए।

ढांचागत विकास कोई साधारण बात नहीं है। गांधी ने जिन स्थानीय संसाधनों को लगाकर ग्रामीण भारत के निर्माण की बात की थी, उसे तरीके से लागू करना होगा। क्योंकि इस तरह की विकास प्रक्रिया स्थानीय नेतृत्व को बढ़ाने के अलावा अधिक सुंदर तथा लोकोपयोगी परिणामों की ओर ले जाती है। साहित्यिक संदर्भों में देखा जाए तो विलियम वर्डस्वर्थ ने जिस प्रकृति की ओर लौटने की बात की थी, उसी आवाहन को अपनाना होगा। पारिस्थितिकी पर्यटन मूलतः प्रकृति को बचाने की पहल है। एक मुकम्मल कोशिश है जो सरकार और समाज के सामंजस्य के बूते शुरू किया जाने वाला आंदोलन है, जिस आंदोलन में कोई स्वर नहीं, कोई हंगामा नहीं है बल्कि कुछ करने की अनोखी और सच्ची ज़िद है। सबको साथ रखकर, सबको लाभान्वित कर प्रकृति को बचा लेना एक खास मकसद है। जैसे टूर ऑपरेटरों–गैर सरकारी भागीदारों का मार्गदर्शन करने संबधी फ्रेमवर्क तैयार करने, स्थानीय प्रकृति गाइडों के लिए कारगर प्रशिक्षण कार्यक्रमय और भागीदार, समुदाय–आधारित पर्यावरण पर्यटन आयोजना के लिए पद्धतियाँ और कौशल विकसित करने की खास ज़रुरत है।

योजनाकारों को नहीं भूलना है कि साहस, परिश्रम, ईमानदारी और शीघ्र निर्णय लेने जैसे अंतर्निहित गुणों का विकास समुचित मानव जाति की पूंजी के रूप में होना चाहिए। अनुमान है कि दुनिया भर में 10 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्रों में कुल मानव आबादी के मात्र 4 प्रतिशत लोग रहते हैं। किंतु वे लोग तराई में रहने वाले 40 प्रतिशत लोगों के भाग्य का निर्धारण करते हैं इस बात को कभी नहीं भुलाया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि पर्यटन ढाँचे के आयोजन और विकास, इसका परवर्ती परिचालन और इसका विपणन करते समय हमें पर्यावरण तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिरता के मानदंडों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। निसंदेह प्रकृति कभी उस दिल को धोखा नहीं देती जो उसे प्यार करता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और पर्यावरण विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में डेवेलपमेंट फाइल्स (हिंदी) में बतौर प्रबंध संपादक कार्यरत हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेलः amarendra.kishore@gmail.com